*शुल्क १५ वर्ष*
*२१००/- रुपये*

# foKfIr

*एक प्रति ८/- रुपये*
*वार्षिक २५०/- रुपये*

**rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k**

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक १५ : नई दिल्ली : १५-२१ जुलाई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५१ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ६२ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। देशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन-सेवा हेतु पहुंच गए हैं। यह क्रम निरंतर जारी है। इस सप्ताह हुई हल्की वर्षा ने मानसून के आगमन का संकेत दिया है। वीतराग समवसरण में सभी कार्यक्रम व्यवस्थित चल रहे हैं।

## ije ikou vkpk;Jh egkJe.k tlky e

### u'kkeDr tlky dk vkgoku

**..., tuA** प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्वागत का अवशिष्ट उपक्रम रहा। रावल श्री किशनसिंह, राजस्थान के राजस्व मंत्री श्री हेमाराम चौधरी, भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती फैनादेवी भंसाली, मंत्री श्रीमती नीतू सालेचा, डॉ.सोहनराज तातेड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संकल्पों का उपहार समर्पित किया गया। तेरापंथ कन्या मंडल और तेरापंथ महिला मंडल द्वारा हस्तनिर्मित कलाकृति पूज्यवर को भेंट की गई। श्रीमती शशि भंसाली और सुश्री प्रियंका भंसाली द्वारा भी हस्तनिर्मित कलाकृति समर्पित की गई।

मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि विश्रुतकुमारजी, साध्वी स्मितप्रभाजी, साध्वी गौरवप्रभाजी, साध्वी तरुणयशाजी, साध्वी संभवश्रीजी, समणी लावण्यप्रज्ञाजी, समणी समताप्रज्ञाजी, ने अपने गांव में अपने आराध्य के अभिनंदन में हृदयोद्‌गार व्यक्त किए। साध्वी ऋजुयशाजी ने गीत का संगान किया। मुनि मदनकुमारजी ने विचार व्यक्त किए।

परम पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में संतदर्शन की महिमा को व्याख्यायित किया तथा चतुर्मास हेतु जसोल आगमन के संदर्भ में कहा--'चतुर्मास का समय ऐसा आता है, जब साधु-साध्वियां एक क्षेत्र में लम्बा प्रवास करते हैं। हम इस बार का चतुर्मास करने हेतु जसोल आए हैं। हमारे धर्मसंघ की ग्यारह पीढ़ियों में जसोल में पहली बार चतुर्मास करने मैं ही आया हूं। मैं ही नहीं, एक बड़ा साधु-साध्वी समुदाय मेरे साथ है। ऐसा अवसर कम आता होगा, जब १४० से अधिक ठाणे चतुर्मास में साथ रहते हैं। ऐसा अवसर किसी-किसी क्षेत्र को मिलता है। जसोल को यह मिल रहा है, इसलिए यह विरल चतुर्मास है। जसोल परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की मर्यादा महोत्सव और परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की दीक्षा प्रदान भूमि है। अपने गुरुओं के साथ जुड़ी हुई भूमि पर हम आए हैं।'

'नशामुक्त जसोल' का आह्वान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'चतुर्मास के दौरान जसोल की छत्तीस कौम में हमारा कार्य चले। चतुर्मास हेतु हम एक मिशन यह बना रहे हैं--'नशामुक्त जसोल'। जसोल के सभी लोग नशामुक्त बनें अथवा रहें, ऐसा प्रयास करना है। जैन हो या अजैन हमें तो गुडमैन बनाने का प्रयत्न करना है। केलवा चतुर्मास के लिए हमने मिशन बनाया था 'नशामुक्त केलवा'। उसमें काफी सफलता भी मिली। अब 'नशामुक्त जसोल' के निर्माण में हमारा योगदान हो, हमारी शक्ति लगे, लक्ष्यबद्धता के साथ हम इस कार्य में अपना पुरुषार्थ करें।'

### tc e>l prekl fy[kk,

**f tykbA** प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यवर नाकोड़ा रोड़ स्थित पारस भवन पधारे। आचार्यवर ने भवन

का निरीक्षण किया। परिसर में एक नए भवन का लोकार्पण हुआ। उस भवन के हॉल में आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में श्री शंकरलाल ढेलड़िया ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन अध्यक्ष श्री मूलचन्द सालेचा ने किया।

पारस भवन में सन् १९८५ के जसोल मर्यादा महोत्सव से जुड़े एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग की चर्चा करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य साधु-साध्वियों के आगामी चतुर्मास घोषित करते हैं। इस कार्य के साथ युवाचार्य संपृक्त रहते हैं। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने उस समय मुझसे चतुर्मास लिखाए। इसी परिसर स्थित हॉल के सन्निकट का कक्ष, दोपहर करीब बारह से एक बजे का समय रहा होगा। मैं तो उस समय मुनि था और मुझसे यह काम करवाया था।' आचार्यवर ने उस महोत्सव के समय के कई प्रसंग सुनाए।

## vuklfDr g bfUn; l;e dh lkèkuk

प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी नंदिताश्रीजी, साध्वी तरुणप्रभाजी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री शंकरलाल ढेलड़िया, मुमुक्षु मर्यादा, स्नेहा बोहरा, प्रचार-प्रसार विभाग के श्री गणपत भंसाली, कन्या मंडल संयोजिका नेहा चौपड़ा, उपसंयोजिका रीना चौपड़ा, श्री जितेन्द्र सालेचा ने अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। विशेष रूप से उपस्थित अतिरिक्त वाणिज्य कर अधिकारी श्री कांतिलाल श्रीश्रीमाल ने अपने प्रासंगिक विचार रखे।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में ज्ञान की साधन हमारी ज्ञानेन्द्रियां है। ज्ञानेन्द्रियां पांच हैं तो कर्मेन्द्रियां भी पांच हैं। ज्ञानेन्द्रियां ज्ञान प्राप्ति का माध्यम हैं। इसका दूसरा पक्ष है कि ये भोग का भी साधन बन सकती हैं। मनोज्ञ व अमनोज्ञ शब्द सुने जाते हैं। मनोज्ञ के साथ राग भाव और अमनोज्ञ के साथ द्वेष भाव सहज ही संपृक्त रहता है। इन्द्रियों के माध्यम से जो सामग्री ग्रहण की जाती है, उसके साथ राग-द्वेष के भाव भी जुड़ सकते हैं। इन्द्रियां गलत नहीं हैं। इसके साथ जुड़े राग-द्वेष के भाव गलत हैं। इन्द्रियों का दुरुपयोग नहीं, सदुपयोग करें। साधु के आहार को निर्जरा माना गया है, क्योंकि वह अनासक्त होकर संयमी शरीर को चलाने के लिए भोजन करता है। अध्यात्म की साधना में इन्द्रिय विजय की साधना का बहुत महत्त्व है। आसक्ति के छूटने से यह साधना संभव हो सकती है। सत् स्वाध्याय से भावधारा को निर्मल किया जा सकता है। वस्तुतः अनासक्ति की साधना समता की साधना है, अहिंसा की साधना है, इन्द्रिय संयम की साधना हैं।'

## n< ldYih Hkkforkek Fk vkpk; fHk{k

**„ tykbA** आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी व चातुर्मासिक चतुर्दशी का संयुक्त योग। प्रातः कालीन कार्यक्रम में साध्वी उज्ज्वलरेखाजी आदि साध्वियों ने गीत प्रस्तुत किया। साध्वी प्रबुद्धयशाजी, अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़, श्री भंवरलाल भंसाली, श्री दीपचन्द बोकड़िया, अणुव्रत समिति के मंत्री श्री सफरू खां, जयश्री सालेचा ने अपने विचार रखे।

आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज के दिन एक छोटे से गांव कंटालिया में एक महामानव का जन्म हुआ। जो तेजस्वी व प्रतिभा संपन्न था। जिसे भीखण या भिक्षु नाम से पुकारा गया। उनकी तेजस्विता उनके बचपन से ही उभर कर सामने आ गई। लगता है उन्होंने पूर्व जन्मों में साधना की थी। उनका चित्त वैराग्ययुक्त था। उनमें अभय का भाव था। उनमें दृढ़ संकल्पी मनोवृत्ति का दर्शन होता था। जन्म होना बड़ी बात नहीं है। हर आदमी जन्मता है। जन्म लेने के बाद जीवन में क्या किया, यह महत्त्वपूर्ण है। गार्हस्थ्य में भी उनमें वैराग्य भावना उभर गई। भीखणजी ने शादी की। उसके कुछ समय बाद सपत्नीक शीलव्रत की साधना की और दोनों ने उपयुक्त समय पर दीक्षा लेने का संकल्प

भी संजोया। इस बीच पत्नी का वियोग हो गया। भीखणजी संयम ग्रहण हेतु समुत्सुक हो गये। मां को समझाना था। आचार्य रघुनाथजी के समझाने से दीक्षा ग्रहण का पथ प्रशस्त हो गया और उनके हाथों बगड़ी में दीक्षा स्वीकार की।'

आचार्य भिक्षु की बोधिप्राप्ति के प्रसंग को सुनाने के पश्चात् आचार्यप्रवर ने कहा--'आचार्य भिक्षु की प्रज्ञा प्रखर थी, वैराग्य भाव अनुत्तर था, जिनवाणी के प्रति गहरा निष्ठाभाव था। उनमें ज्ञानबल, श्रद्धाबल था। वह एक ऐसा तपस्वी जिसे भावितात्मा कहा जा सकता है। उनमें मात्र वैराग्य ही नहीं, तत्त्वज्ञान भी बहुत सूक्ष्म था। उन्होंने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। उन्होंने जिस तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की, यह शतशाखी वटवृक्ष बने। उसकी शाखाएं आगे से आगे जमीन में रोपित होती रहें और संघ का विस्तार व विकास होता रहे।'

चातुर्मासिक चतुर्दशी के संदर्भ में विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा 'पंचमासी चतुर्मास प्रारंभ होने वाला है। शेषकाल का समय यात्रा आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। चतुर्मास काल में एक जगह रहकर काम किया जा सकता है। इस समय का अच्छा उपयोग करना है।' आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'मंत्री मुनि विराजमान है। चतुर्मास में प्रायः प्रतिदिन वक्तव्य सुनने का मौका मिल सकेगा। मुनिश्री के वक्तव्य की शैली विशिष्ट है। वाणी में ओज है, मुनिश्री के पास तत्त्वज्ञान है, बाहुश्रुत्य है।'

पूज्य आचार्यवर ने ज्ञानाराधना के अंतर्गत श्रावक समाज से श्रावक प्रतिक्रमण सीखने का प्रयास करने की प्रेरणा दी। जसोल चातुर्मास में भाइयों को प्रतिक्रमण सिखाने में मुनि परमानंदजी, मुनि यंशवतकुमारजी, मुनि धन्यकुमारजी तथा बहिनों को सिखाने में साध्वी नीतिश्रीजी, साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी ललितकलाजी, साध्वी अमृतप्रभाजी की नियुक्ति की। भाइयों को तत्त्वज्ञान सिखाने का जिम्मा मुनि मदनकुमारजी तथा बहनों का दायित्व साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी वन्दनाश्रीजी व साध्वी उदितयशाजी को सौंपा। दर्शनाचार में बाहर से आने वालों को गुरुधारणा करवाने, चारित्राचार में वैरागी-वैरागन तैयार करने, बारहव्रती श्रावक बनाने का आह्वान किया। वैरागी भाइयों की सूची रखने तथा देखरेख का दायित्व मुनि कीर्तिकुमारजी तथा वैरागन बहनों का दायित्व मुख्यनियोजिकाजी को सौंपा हुआ है। तप आचार में भाइयों की तपस्या का विवरण रखने, उनको संभालने व प्रेरणा देने का दायित्व मुनि जिनेशकुमारजी व मुनि पृथ्वीराजजी तथा बहनों का दायित्व साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी धवलप्रभाजी, साध्वी तरुणप्रभाजी को दिया गया। पूज्यवर ने चतुर्मास में ज्ञानशाला व प्रेक्षाध्यान की कक्षा नियमित चलाने की प्रेरणा प्रदान की। प्रेक्षाध्यान कक्षा का भाइयों के लिए मुनि जयकुमारजी व बहनों के लिए साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी को जिम्मा सौंपा। जैन विद्या कार्यशाला, दोपहर में व्याख्यान आदि की समसामयिक प्रेरणा भी प्रदान की। आज चतुर्दशी होने से आचार्यवर ने हाजरी का वाचन किया। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने खड़े होकर लेखपत्र का समुच्चारण किया।

## rjkiFk LFkkiuk fnol dk vk;kstu

**...** **tytbA** आषाढ़ी पूर्णिमा, २५३ वां तेरापंथ स्थापना दिवस। सर्वप्रथम चातुर्मास स्थापना के संदर्भ में मंत्रोच्चारपूर्वक अनुष्ठान वीतराग समवसरण में चला। प्रायः सभी साधु-साध्वियों की समवेत समुपस्थिति में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सस्वर अनुष्ठान संपन्न कराया। अनुष्ठान के बाद पूज्यवर के महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। पारमार्थिक शिक्षण संस्था की मुमुक्षु बहिनों, साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी ऋजुयशाजी के गीत प्रस्तुत हुए। मुनि मदनकुमारजी, साध्वी अमृतप्रभाजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, समणी लावण्यप्रज्ञाजी के वक्तव्य हुए। कन्यामंडल ने संकल्पों से युक्त कलात्मक फाइल भेंट की। तेरापंथ किशोर मंडल ने संकल्प पत्र का फ्रेम भेंट किया। सभी किशोरों ने आचार्यवर से संकल्प स्वीकारे। हेमलता

पीपाड़ा व सोनल पीपाड़ा ने संयुक्त रूप से गीत प्रस्तुत करते हुए अपनी दो सी.डी. 'मर्दानी सिरियारी' व 'गुरु महाश्रमण जय हो' लोकार्पित की।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आचार्य भिक्षु ने अंधकार में प्रकाश फैलाने का प्रयास किया, अध्यात्म की लौ जलाई। उनमें गजब की प्रतिभा थी। उन्होंने आगमों के तलस्पर्शी हार्द को पकड़ा। वे केवल लकीर पर चलना नहीं चाहते थे। उन्हें देखादेखी पसंद नहीं थी। वे हर वस्तु को उपयोगिता के आधार पर स्वीकार करते। पूरे भारत में जसोल वर्तमान में तीर्थस्थान है। श्रावक-श्राविकाएं ज्ञान संपन्नता के साथ संयम, जप, तप आदि में अपने समय का नियोजन करें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन को एक नई दिशा दी और तेरापंथ का जन्म हो गया। उन्होंने तेरापंथ को अहंकार व ममकार की चेतना से मुक्त रखने का प्रयास किया। यह धर्मसंघ देवदुर्लभ धर्मसंघ है। संघ की विलक्षणता का आधार है एक आचार्य, एक आचार व एक तत्त्व निरुपण की शैली। आचार्य भिक्षु ने जो बीज बोया, वह विशाल वटवृक्ष के रूप में प्रत्यक्ष है। इसकी शीतल छाया में लाखों लोग साधना निरत हैं। धर्मसंघ ने जो विकास किया वह सबके सामने है। आचार्यवर संघ विकास हेतु जागरूक व श्रीवृद्धि हेतु प्रतिबद्ध हैं।' महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'स्थापना के ढाई सौ वर्षों के बाद संघ नई करवट ले। नई प्रतिभाओं की खोजकर उनकी बुद्धि, प्रतिभा व समय का पूरा उपयोग करे। संघीय आस्था को पुष्ट करने के लिए आवश्यक है कि सब अपनी गौरवपूर्ण परम्परा को समझें। परिस्थितियों के सामने घुटने न टेकें, आचार-विचार के प्रति जागरूक रहें, निष्ठा पंचक की भावना को आगे बढ़ाएं। आज के दिन को संकल्प दिवस के रूप में मनाएं और अपनी समझ, चिंतन व श्रम का सार्थक उपयोग करें।'

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य है। वीतराग द्वारा प्रवर्तित प्रवचन यथार्थ होता है। प्रवचन का एक अर्थ शासन भी होता है। जिनशासन का एक अंग है भैक्षव शासन-तेरापंथ शासन। हमने आत्म कल्याण हेतु अभिनिष्क्रमण किया है। इसके प्रति हमारी निष्ठा रहे। हम ऐसी साधना करें जिससे आत्मकल्याण हो सके। तेरापंथ धर्मशासन में दीक्षित साधु-साध्वियों में आत्मनिष्ठा, आत्मकल्याण की भावना पुष्ट रहे। इसके सदस्यों में शासन के प्रति निष्ठा हो। यहां व्यक्ति गौण है, संघ प्रमुख है। 'यह गण मैं हूं और मैं यह गण है' शासन के प्रति यह भाव अक्षुण्ण रहे। सबमें आज्ञा निष्ठा की भावना भी गहरी बनी रहे।' इस संदर्भ में आचार्यवर ने मुनि जिनेशकुमारजी की संघ निष्ठा का विशेष उल्लेख किया।

गौरवशाली तेरापंथ धर्मसंघ के सौभाग्य को निरूपित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आज के दिन केलवा अंधेरी ओरी में संत भीखणजी ने भाव संयम स्वीकार किया। इसी के साथ तेरापंथ की स्थापना हो गई। ऐसा शासन मिलना हमारा सौभाग्य है। संघ की श्रीवृद्धि में हमारे आचार्यों का कितना बड़ा योगदान है। संघ के समग्र विकास व सर्वतोमुखी अभिवृद्धि हेतु कितना प्रयास किया है, हमारे पुरखों ने अपने खून और पसीने से इसे सींचा है। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रवर्तित इस धर्मसंघ को आगे बढ़ाने और उसे सुरक्षित रखने में हम जागरूक रहें।'

आज्ञा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारे धर्मसंघ में आज्ञा-व्यवस्था का बड़ा महत्त्व है। किसी साध्वी, समणी को साधु से या साधु को साध्वी, समणी से बात करनी हो तो पहले आज्ञा लेनी होती है। कदाचित् बात करनी पड़ जाती है तो बाद में इसका निवेदन करना आवश्यक होता है। यह हमारी आचार पक्ष की व्यवस्था है। साध्वीप्रमुखाजी पूछती है कि मुझे संतों से बात करनी है। मैं साध्वीप्रमुखाजी से कहना चाहूंगा कि संतों व समणों से बात करने की शाश्वती आज्ञा है, बक्शीश है। रोजमर्रे में पूछने की जरूरत नहीं है। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री विराजमान है। बिना रोजमर्रा की आज्ञा लिए साध्वियों, समणियों से बातचीत व सेवा कराने तथा बाइयों को सेवा कराने की शाश्वत आज्ञा व

बक्शीश कर रहा हूं। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को यह बक्शीश की जा रही है कि अपने कमरे में बैठे तो वहां कुर्सी का उपयोग कर सकती है। साध्वी सुमतिप्रभा को गुरुकुलवास में साझ के अग्रणी की वंदना करा रहे हैं। यह हमारे साहित्य के कार्य में संलग्न है, अपने कार्य में काफी दत्तचित्त रहती है। इसमें अनेक विशेषताएं हैं।'

दो साध्वियों को 'शासनश्री' के रूप में स्वीकार करते हुए आचार्यवर ने कहा--'पूज्य कालूगणी द्वारा दीक्षित दो साध्वियां बहिर्विहार में हैं। वैसे कालुयुग की अवशेष रूप चार साध्वियां हैं। इनमें दो का उल्लेख कर रहा हूं। साध्वी मानकुमारीजी (बीदासर) जो अभी साध्वी लब्धिश्रीजी के साथ पाली में हैं। उन्हें मैं 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारीजी (बीदासर) के रूप में स्वीकार कर रहा हूं। साध्वी राजकंवरजी (गोगुन्दा) अभी उदासर में हैं। उन्हें मैं 'शासनश्री' साध्वी राजकंवरजी (गोगुन्दा) के रूप में स्वीकार कर रहा हूं। कालूयुग की दो और साध्वियां शासनश्री व अग्रगण्य हैं। दो अन्य साध्वियों को 'शासनश्री' के रूप में स्वीकार किया है। ऐसा करके एक तरह से मैं कालूगणी को श्रद्धा अर्पण कर रहा हूं। वह श्रद्धा कालूगणी तक पहुंच जाए, ऐसी मेरी भावना है।

आचार्यवर ने आगे कहा--'बालोतरा के घेवरजी मेहता जिन्हें मंत्रीजी कहते हैं, अच्छे श्रद्धाशील, समझदार व पुराने श्रावक हैं। जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) परीक्षा के कार्य में सक्रिय रहते हैं। चिंतन भी करते हैं। इनको आज श्रद्धानिष्ठ श्रावक के रूप में स्वीकार करता हूं।' पूज्यप्रवर ने श्री सोहनलालजी सालेचा तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनुदेवी को आगे दर्शन करने हेतु याद किया और कहा--'जसोल के सोहनलालजी सालेचा व अनुदेवी सालेचा का दीक्षा की दृष्टि से बड़ा योगदान है। इन्होंने अपनी तीन संतानों-मुनि विश्रुत, साध्वी मलयश्री, समणी समताप्रज्ञा को संघ में समर्पित किया है, शिष्य भिक्षा दी है। इसके लिए इनको साधुवाद दे रहा हूं। यह भी सेवा की बात है। आज मैं सोहनलालजी सालेचा को महादानी श्रावक व अनुदेवी को महादानी श्राविका के रूप में स्वीकार करता हूं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया। रात्रि में धम्म जागरणा का आंशिक उपक्रम रहा।

## iopu I nkuk dk ytHk

**† tytbA** प्रातःकालीन कार्यक्रम से पूर्व परमाराध्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में साधु-साध्वियों की सामूहिक संगोष्ठी समायोजित हुई। जिसमें पूज्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परमश्रद्धास्पद आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'चतुर्मास का समय अपना विशेष महत्त्व रखता है, उसमें भी श्रावण और संवत्सरी तक का समय और ज्यादा विशिष्ट होता है। यह समय विशेष रूप से धर्माराधना का होता है। इस दौरान श्रोता भी कुछ विशेष सुनने की उम्मीद लेकर आते हैं। इसलिए प्रातःकालीन प्रवचन आगम आदि के सुंदर सूक्तों अथवा श्लोकों पर आधारित होता है तो श्रोताओं को अच्छी खुराक मिल सकती है। प्रवचन करना भी अपने आप में एक साधना है, सेवा है, निर्जरा का साधन है। वह दूसरों के कल्याण के लिए किया जाता है और आत्मकल्याण का निमित्त भी बन जाता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रवचन श्रवण से होने वाले लाभ की चर्चा करते हुए कहा--'प्रवचन श्रवण करने वाला व्यक्ति अनेक-अनेक पापों से अनायास बच जाता है। अनेक नई जानकारियां भी प्राप्त हो सकती हैं तथा पहले से प्राप्त जानकारी परिपुष्ट बन सकती है। अच्छा उपदेश सुनने से मानों कान भी पवित्र हो जाते हैं। मन की एकाग्रता भी बढ़ सकती है।'

अपने प्रवचन के उपरान्त परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज से परम पूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित सप्तमाचार्य डालगणी के जीवन पर आधारित 'डालिम चरित्र' नामक आख्यान का वाचन प्रारंभ किया।

पूज्यवर के मुखकमल से सुमधुर स्वर लहरियों के साथ राजस्थानी भाषा में सरस शैली में व्याख्यायित सप्तमाचार्य का जीवन चरित्र जनमेदिनी के लिए आह्लादजनक और तृप्तिदायक सिद्ध हो रहा है।

कार्यक्रम में तेरापंथ कन्या मंडल, जसोल द्वारा चौबीसी के कुछ गीतों के अशों का संगान किया गया। श्री घेवरचन्द मेहता ने अपने भावोद्‌गार व्यक्त किए। श्री बाबूलाल देवता ने अपनी तपस्या के वृद्धिंगत करने हेतु पूज्यप्रवर से प्रत्याख्यान किया। आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा आदि पदाधिकारियों द्वारा चतुर्मास २०१२ की 'पावस प्रवास' पुस्तिका तथा फड़द (चतुर्मास सूची) पूज्यप्रवर को भेंट की गई।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'कितनी सुव्यवस्था और तत्परता है कि कल अर्थात् आषाढ़ी पूर्णिमा को चतुर्मास लगा और आज श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन पावस प्रवास पुस्तिका और फड़द प्रकाशित होकर हमारे हाथ में आ गई। तेरापंथ के किसी भी साधु-साध्वी का चतुर्मास कहां है, उसकी जानकारी आपको इस पुस्तिका से मिल सकती है, हमारे साधु-साध्वियों का श्रम इसमें लगता है। साध्वियों का सारा लेखा-जोखा करने में साध्वी कल्पलताजी का वर्षों से योगदान है। समणीवृंद का विवरण समणियां बनाकर देती हैं। फिर सबको संयोजित करने का कार्य मुनि कीर्तिकुमारजी करते हैं। इसमें इनका काफी श्रम रहता है।' तेरापंथ कन्या मंडल जसोल द्वारा कल उपहृत की गई फाईल के एक-एक पृष्ठ को निहारते हुए आचार्यवर ने कहा--'कन्या मंडल द्वारा भेंट की गई इस फाईल में बहुत कलाकृतियां हैं। पूरी फाईल पुस्तक और प्रदर्शनी जैसी बन गई है। लगता है--इसमें काफी श्रम किया गया है।'

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद जसोल के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री रमेश भंसाली ने भावाभिव्यक्ति देते हुए कार्यकारिणी के नामों की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेश बुरड़ ने शपथ दिलाई। अभातेयुप के सहमंत्री श्री हनुमान लूंकड़ ने विचार व्यक्त किए। आचार्यवर ने तेयुप की नवगठित कार्यकारिणी को खूब अच्छा और पवित्र कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। आज से पूज्यवर के पावन सान्निध्य में तेयुप जसोल द्वारा रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान जैन विद्या कार्यशाला का क्रम प्रारंभ हुआ।

## inkFkklfDr lcp

**‡ tykbA** परम श्रद्धास्पद आचार्यवर की पावन सन्निधि में प्रातःकालीन कार्यक्रम से पूर्व आज से 'निर्णयविंशिका' का वाचन प्रारंभ हुआ। साधु-साध्वियों के लिए समायोजित इस उपक्रम में मंत्री मुनिश्री द्वारा ग्रन्थ का वाचन किया जाता है तथा जिज्ञासाएं पूज्यप्रवर और मंत्री मुनिश्री द्वारा समाहित की जाती हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में दान का विशेष महत्त्व है। सामान्यतया जिसके पास विशेष कुछ नहीं होता, वह दरिद्र कहलाता है, किन्तु जिसके पास कुछ होता है और वह आसक्तिवश दान नहीं देता तो आचार्य भिक्षु के साहित्य के अनुसार वह भी दरिद्र है। पूज्यप्रवर ने दान के दो प्रकारों की चर्चा करते हुए कहा--'दान दो प्रकार का होता है-लौकिक एवं लोकोत्तर। सांसारिक संदर्भों में जो दान दिया जाता है, वह लौकिक दान है और शुद्ध साधु को दिया जाने वाला शुद्धदान लोकोत्तर है। अनुकंपा, लज्जा, अंहकार आदि अनेक भाव दान के कारण बन सकते हैं। याचक को मुंह का नहीं हाथ का उत्तर देना सांसरिक संदर्भों में उदारता कहा जाता है। मित्र, स्वजन आदि को उपहार देने से पारस्परिक प्रेम भी बढ़ सकता है। शुद्ध साधु को विधि के अनुसार दान देना धर्म है, वह सुपात्रदान कहलाता है। सुपात्रदान निष्फल नहीं जाता। व्यक्ति पदार्थ के प्रति आसक्ति न करे और उसका दुरुपयोग न करे। पदार्थासक्ति साधना में बाधक है। इसलिए साधक उससे बचने का अभ्यास करे।'

अपने प्रवचन के उपरान्त पूज्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान शृंखला की अग्रिम कड़ी को प्रस्तुत

किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। पूज्यवर के इंगितानुसार तेरापंथ कन्या मंडल, जसोल ने प्रतिदिन चौबीसी के एक गीत के संगान का क्रम प्रारंभ किया। इस क्रम में आज भगवान ऋषभ स्तुति प्रस्तुत की गई।

आज सायंकाल तमिलनाडु के कमर्सियल टेक्स मिनिस्टर श्री अग्री एस.एस.कृष्णमूर्ति ने पूज्यवर के दर्शन किए और पाथेय प्राप्त किया।

## tk vieÙk] og vfgald

**^ tykbA** परम पूज्य आचार्यवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'ज्ञानी के ज्ञान का सार है कि वह किसी की हिंसा न करे। जिसने अहिंसा को जान लिया, उसने बहुत कुछ जान लिया। साधु के लिए पांच महाव्रत अनिवार्यतः पालनीय होते हैं तथा श्रावक के लिए पांच अणुव्रतों का विधान किया गया। उनमें पहला है - अहिंसा। साधु अहिंसा का पुजारी होता है और अहिंसा उसका जीवनव्रत है। जो अप्रमत्त होता है, वह अहिंसक होता है। अजागरूकता की स्थिति में साधु के भी हिंसा का दोष लग सकता है। इसलिए उसका धर्म है कि वह हर समय जागरूक रहे। गृहस्थ भी अहिंसा का पूर्णतया पालन न कर सके तो एक सीमा तक हिंसा का परित्याग करे।' पूज्यवर की प्रेरणा से पंडाल में उपस्थित अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास के दौरान जमीकन्द और रात्रिभोजन का परित्याग किया। अपने प्रवचन के उपरान्त आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी उद्‌बोधन हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल ने चौबीसी संगान के अंतर्गत भगवान अजितनाथ की स्तुति का संगान किया। मुमुक्षु बहनों के गीत का संगान किया।

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने आज मध्याह्न से साध्वीवृंद, समणीवृंद और मुमुक्षु बहनों के लिए परम पूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा संस्कृत भाषा में रचित 'पंचसूत्रम्' ग्रन्थ का अध्यापन प्रारंभ किया। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर साध्वियां, समणियां और मुमुक्षु बहनें आह्लादित थीं। आज अपराह्न में वंदना जैन (डी.सी.सेलटेक्स, जोधपुर) तथा श्री दलपतसिंह भाटी (सी.आई.बालोतरा थाना) ने पूज्यवर के दर्शन कर पाथेय प्राप्त किया।

## IR;Ikèkuk e Igk;d ok.kh I;e

**‰ tykbA** प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति क्रोध, लोभ, भय और हास्यवश मृषा भाषा का प्रयोग करता है, किन्तु वह उसके लिए अविश्वास का कारण बन सकता है। एक मुनि के लिए आजीवन मृषावाद वर्जनीय होता है। यदि संकल्प हो तो एक गृहस्थ भी काफी अंशों में झूठ से बच सकता है। सत्य की प्रकृष्ट साधना के लिए वाणी का संयम जरूरी है। कम बोलने वाला व्यक्ति अनायास मृषावाद से काफी बच जाता है। यदि व्यक्ति सत्य न बोल सके तो उस समय मौन करना ज्यादा उपयुक्त है। मृषावाद से पूर्णतया मुक्त रहना बहुत बड़ी साधना होती है। जो मृषा से सर्वथा मुक्त रहता है, उसका जीवन पवित्र बन जाता है। प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर ने 'डालिम चरित्र' का वाचन किया।

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल, जसोल द्वारा चौबीसी संगान के अंतर्गत भगवान संभवनाथ की स्तवना की गई। श्री मदनलाल मरलेचा ने गीत का संगान किया। सुश्री माणक कोठारी ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी।

## ohrjkxrk g uodkj e=k dh vkRek

**Š tykbA** प्रातःकालीन कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा मंत्र दीक्षा के रूप में पूर्व निर्धारित था। पूरे देश में बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान करने के क्रम में यह कार्यक्रम आयोजित होता है। मुनि दिनेशकुमारजी ने मंत्र दीक्षा के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। श्री कुमारपाल संकलेचा द्वारा विचार प्रस्तुति के बाद जसोल ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने एक रोचक परिसंवाद प्रस्तुत किया। जगराओं में साध्वी मधुरेखाजी की प्रेरणा से गुरु धारणा के भरे गए १०८ फार्म पंजाब के ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक श्री प्रवीण मित्तल ने पूज्यवर को उपहृत किए। आचार्यवर ने साध्वीश्री के कार्य की सराहना करते हुए उन्हें श्रमशील बताया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन रूपी यात्रा को निर्विघ्न चलाने के लिए व्यक्ति अनेक प्रकार के उपाय करता है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में विघ्न-बाधा न आए। इसके लिए वह कुछ महत्त्वपूर्ण मंत्रों का प्रयोग करता है। नवकार मंत्र मंत्रों का राजा है। इस मंत्र के बराबर दूसरा कोई मंत्र नहीं है। यह शक्तिशाली मंत्र है। मनोयोगपूर्वक इसका निरंतर जप चले तो इसके प्रभाव का अनुभव किया जा सकता है।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हर अक्षर अपने आपमें मंत्र बनने की क्षमता रखता है। कोई भी अक्षर अमंत्र नहीं है। अक्षरों की संयोजना कर मंत्र बनाने का ज्ञान रखने वाले मनीषी कम ही मिलते हैं। विभिन्न धर्मों व शास्त्रों में विविध प्रकार के मंत्र उपलब्ध होते हैं। जैन शासन में नवकार मंत्र का अपना विशिष्ट महत्त्व है। नवकार मंत्र की आत्मा है-वीतरागता। नवकार में समाविष्ट पांच शक्तियों में दो अर्हत् व सिद्ध वीतरागी होते हैं। आचार्य स्वयं वीतरागता की साधना करते हुए सबको वीतरागता के पथ पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उपाध्याय वीतराग वाणी का अध्ययन व अध्यापन कराने वाले होते हैं। साधु वीतरागता की साधना करने वाले होते हैं। नवकार मंत्र के द्वारा विघ्न-बाधाओं का निवारण होना एक बात है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात है कि इसकी साधना से वीतरागता की दिशा में हम आगे बढ़ सकते हैं। इसके लिए यह अपेक्षित है कि नवकार मंत्र के अर्थ बोध को हृदयंगम करें और इसके जप की तल्लीनता में जाने का प्रयास करें।''

मंत्र दीक्षा के लिए उपस्थित अधिकांशतः ज्ञानशाला के बच्चों को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'छोटे-छोटे बच्चों में भी नवकार मंत्र के जप का क्रम प्रारंभ हो। मंत्र दीक्षा एक धार्मिक संस्कार है। नमस्कार महामंत्र में किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। यह पापों का नाश करने वाला और सब मंगलों में प्रथम मंगल है।'

आचार्यवर ने उपस्थित बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की और संकल्प करवाए। पचपदरा के मुमुक्षु रौनक संकलेचा ने अपने वक्तव्य में मुनि दीक्षा का आदेश प्रदान करने की प्रार्थना की। भीलवाड़ा के मुमुक्षु प्रतीक टोडरवाल ने भी दीक्षा की प्रार्थना की। **vkpk;oj u vR;Ur dik djd ee{k jkud dk lkèk ifrØe.k lh[ku o ee{k irhd dh nh{kk ‡ uoEcj dk tlky e inku dju dh ?kk"k.kk dhA**

परम पूज्य आचार्यवर की सन्निधि में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा द्विदिवसीय ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक कार्यशाला का आयोजन हुआ। जिसमें बाईस अंचलों में से पन्द्रह अंचलों के संयोजकों, कई सहसंयोजकों तथा विभिन्न विभागीय समितियों के छत्तीस भाई-बहिनों ने भाग लिया। छह तकनीकी सत्रों में चली इस कार्यशाला में कई उपयोगी निर्णय लिए गए। आचार्यवर की पावन सन्निधि में चली संगोष्ठी में ज्ञानशाला प्रभारी मुनि उदितकुमारजी, राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चौपड़ा ने अपने विचार रखे।

आचार्यवर ने मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा--'ज्ञानशाला हमारे धर्मसंघ की एक नींव की गतिविधि है। यह सुसंस्कारी बाल पीढ़ी के निर्माण का उपक्रम है। प्रारंभ से आध्यात्मिक वातावरण मिलने से भौतिकता पर अंकुश लग सकता है। प्रशिक्षण आदि से जुड़े लोग एक तरह से बालपीढ़ी की सेवा कर रहे हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी वर्षों से इस कार्य से जुड़े हुए हैं। पहले मंत्री मुनिश्री प्रभारी थे। अब मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी व मुनि हिमांशुकुमारजी इस कार्य को देख रहे हैं। ज्ञानशाला का कार्य पवित्र कार्य है। यह निर्बाध रूप से चलता रहे।'

## lk{kkRdkj dj lR; dk

**‹ tytbA** प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय कन्या मंडल ने चौबीसी के चतुर्थ भगवान अभिनंदन स्तुति गीत का संगान किया। समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपनी पुस्तक 'आचार्य तुलसी का अध्यापन कौशल' के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति के साथ पुस्तक पूज्यप्रवर को उपहृत की। पुस्तक के बारे में पर्यावरणविद् श्री प्रभु नारायण ने अपने विचार रखे। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति स्वयं सत्य खोजे। अन्य के द्वारा प्रस्तुत सचाई उत्कृष्ट नहीं होती। उत्कृष्ट बात यह होती है कि व्यक्ति स्वयं सत्य का साक्षात्कार करे। वैज्ञानिक सत्य का अन्वेषण करते हैं और उसका साक्षात् करने का प्रयास करते हैं। अध्यात्म मनीषी अतीन्द्रिय ज्ञान के द्वारा सत्य का साक्षात्कार करते हैं। विज्ञान ने आज इतना विकास किया है कि यंत्रों के द्वारा सूक्ष्म पदार्थों को देखा जा सकता है।'

अध्यात्म एवं विज्ञान के अंतर को स्पष्ट करते आचार्यवर ने कहा--'विज्ञान के द्वारा सत्य को खोजा जाता है और अध्यात्म के द्वारा भी सत्य का साक्षात्कार किया जाता है। अध्यात्म का मुख्य लक्ष्य है मोक्ष को प्राप्त करना। अध्यात्म के क्षेत्र में वीतरागता का महत्त्व है जबकि विज्ञान में ऐसा कोई सिद्धान्त नहीं। अध्यात्म के क्षेत्र में तो आत्मा मुख्य तत्त्व है। आत्मा अमूर्त्त है। यह आंखों की दृश्यता का विषय नहीं बन सकती।'

आज से प्रारंभ हो रहे उपासक शिविर के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'उपासक भाई-बहिन शिविर में तत्त्व ज्ञान का विकास करें। उनका ज्ञान जितना संपुष्ट होगा, वे दूसरों को अच्छी खुराक दे सकेंगे। उपासकों का यह ध्येय भी रहे कि वे अधिक से अधिक स्वाध्याय करें। स्वाध्याय की सामग्री को दिमाग में रखें, जिससे जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों को जन सामान्य के मध्य सम्यक् प्रस्तुति दे सकें। उपासक मद्दुक श्रावक के उदाहरण बनें। उपासिकाएं जयंति श्राविका जैसी बनें, ऐसा सबका प्रयास हो। प्रयत्न से निष्पत्ति भी आ सकती है।'

लोकार्पित ग्रन्थ के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के पास पढ़ने का अनेक शिष्य-शिष्याओं को अवसर मिला। गुरुदेव की अध्यापन में रुचि रहती थी। उनमें अध्यापन कौशल प्रखर था। समणी कुसुमप्रज्ञाजी प्रतिभाशालिनी समणी है, संपादन व लेखन के कार्य में संपृक्त है। अनेक-अनेक ग्रन्थों के संपादन में इनका योगदान है। इस क्षेत्र में ये और विकास करती रहे। यह ग्रंथ पाठकों को अच्छी जानकारी व प्रेरणा देने वाला बने। समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अन्य काम भी बड़ी निष्ठा से किए हैं। ये अच्छी वक्त्री है और गाती भी अच्छा है। नेपाल में विश्व हिन्दू सम्मेलन में इनका भाषण काफी प्रशंसित हुआ था। ये अच्छा विकास करती रहे और खूब अच्छा कार्य करती रहे।'

## vVV vkLFkk gk 'kklu dh ifr

**f, tytbA** प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'हमारा जीवन संघीय

जीवन है। हमारी साधना छद्मस्थ जीवन की साधना है। छद्मस्थ के लिए समर्पण आवश्यक है। विश्वास का घनीभूत होना समर्पण है। समर्पित व्यक्ति संकल्प-विकल्पों से मुक्त रहता है। हम संघ-संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित रहें। समर्पण से हमारा सम्यक्त्व मजबूत बनता है और व्यक्ति आराधक पद को प्राप्त करता है।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संघीय जीवन में व्यवस्था, सम्मान आदि को लेकर छोटी-मोटी प्रतिकूलता की बात हो सकती है। इन तुच्छ बातों को लेकर धर्मसंघ से बाहर पांव रखने की भावना आना भी पाप है। शासन के प्रति हमारी अटूट आस्था हो। तुच्छ बातों को लेकर संघनिष्ठा में कमी न आने दें। भावना यह रहे कि हम शासन में रमे रहें, शासन हमसे छूट न जाए, हम शासन से टूट न जाएं। अलग-अलग आचार्यों का अलग-अलग शासनकाल आता है। कृपा-अकृपा, अनुकूलता-प्रतिकूलता का दौर आता रहता है। एक ही आचार्य के काल में भी ऐसा हो सकता है। ऐसी स्थिति में भी शासन के प्रति निष्ठा व सेवा भाव बने रहना चाहिए।'

सेवाभाव पर संतोष प्रकट करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारा धर्मसंघ इसलिए विशिष्ट है कि इसके सदस्यों में सेवाभाव विशेष है। साधु-साध्वियों के साथ समण श्रेणी में भी अच्छी सेवाभावना है। हमारी निष्ठा वैयक्तिक नहीं संघीय होनी चाहिए। संघ में एक समय ऐसा भी आया, जब शासनपति नहीं रहे, केवल शासन रहा। मैं याद करता हूं मुनि कालूजी स्वामी (रेलमगरा) को, जिनके द्वारा डालगणी के रूप में संघ को संघपति मिला। उन्होंने अपना हित-अहित नहीं देखा। उस समय के साधु-साध्वियों ने किस प्रकार शासन निष्ठा का परिचय दिया। शासन के प्रति निष्ठा बढ़ती रहे, सेवा व समर्पण भाव विकसित होता रहे, यह वांछनीय है। आज्ञा के प्रति तर्क नहीं, सतर्क रहना चाहिए।'

श्रीडूंगरगढ़ में एक ही दिन में स्वर्गस्थ साध्वी कुशलरेखाजी (सरदारशहर), साध्वी पूनांजी (बीदासर) की स्मृति सभा आयोजित हुई और सामूहिक लोगस्स का ध्यान हुआ।

## lk/oh d'kyj[kkth ¼ljnkj'kgj½ dk ngkolku

साध्वी कुशलरेखाजी का श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, ५ जुलाई को मध्यरात्रि में करीब सड़सठ वर्ष की अवस्था में देवलोकगमन हो गया। परमाराध्य आचार्यवर ने साध्वीश्री के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'साध्वी कुशलरेखाजी का जन्म सरदारशहर के चोरड़िया परिवार में हुआ। स्थानीय डागा परिवार में उनका विवाह हुआ। शादी के कुछ वर्षों बाद पति का वियोग हो गया। पति वियोग के तीसरे दिन हुए देवाभास से उनके मन में वैराग्य की भावना जागृत हुई। लगभग इकतीस वर्ष की अवस्था में सं. २०३२ में परमपूज्य आचार्य तुलसी के मुखकमल से लाडनूं में उनकी दीक्षा हुई। अपने जीवनकाल में क्रमशः साध्वी सिरेकंवरजी (श्रीडूंगरगढ़), साध्वी मनोहरांजी (जयपुर) साध्वी काव्यलताजी के साथ रही। अस्वस्थता के कारण उन्हें इस वर्ष श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में रखा गया और इसी वर्ष उनका देहावसान हो गया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उत्कर्ष को प्राप्त होती रहे।'

## lk/oh iukth ¼chnklj½ dk Loxokl

श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में साध्वी पूनांजी (बीदासर) का श्रावण कृष्णा २, ५ जुलाई को करीब चौरासी वर्ष की वय में सायं लगभग ५.३५ बजे स्वर्गवास हो गया। वे पिछले पन्द्रह दिनों से लू की बीमारी से आक्रान्त थीं। परमाराध्य आचार्यवर ने साध्वीश्री के बारे में अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा--'साध्वी पूनांजी बीदासर के नौलखा परिवार से संबद्ध थीं। बारह वर्ष की अल्पायु में उनकी शादी स्थानीय कुन्दनमल गोलछा के साथ हुई। कुन्दनमलजी की दीक्षा की भावना पहले से थी, किन्तु उनके मन में था कि मुझे

सांसारिक स्वरूप को देखकर ही दीक्षा लेनी है। शादी के कुछ वर्षों के बाद कुन्दनमलजी ने अपनी दीक्षा की भावना पूनांजी के समक्ष रखी। पूनांजी ने कहा--'मैं साधु जीवन के बारे में जानती ही नहीं हूं, ऐसी कोई भावना भी नहीं है।' कुन्दनमलजी ने कहा--'मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर लाया हूं, अतः अब तुम्हें संसार में छोड़कर नहीं जाऊंगा।' एक वर्ष तक निरंतर प्रयास के बाद वह दीक्षा हेतु तत्पर हो गई। बीस वर्ष की सुहागिन वय में सजोड़े सं. १९९६ में पूज्य आचार्य तुलसी के मुखकमल से बीदासर में दीक्षा स्वीकार की। उनके संसारपक्षीय परिवार से मुनि अमृतलालजी (संसारपक्षीय जेठ), साध्वी रत्नांजी (संसारपक्षीया जेठानी), मुनि नेमीचन्दजी (संसारपक्षीय भाई) तथा साध्वी भत्तुजी (संसारपक्षीया ननद) संघ में दीक्षित हुए। वे साध्वी सोनांजी (साजनवासी), साध्वी फेफांजी, साध्वी सुखदेवांजी, साध्वी पिस्तांजी के साथ रहीं। सं. २०५६ से वे श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में थी। दोनों साध्वियों का एक ही क्षेत्र में, एक ही दिन व एक ही ठिकाने में स्वर्गवास हुआ। दिवंगत आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना।'

साध्वीद्वय को सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी स्वर्णरेखाजी, साध्वी प्रज्ञाश्रीजी आदि साध्वियों का आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हुआ। श्रीडूंगरगढ़ श्रावक समाज ने अपने दायित्व का सजगतापूर्वक निर्वहन किया।

## i;"k.k io% uokfàd dk;Øe

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. खाद्य संयम दिवस | १४ अगस्त | ६. जप दिवस | १९ अगस्त |
| २. स्वाध्याय दिवस | १५ अगस्त | ७. ध्यान दिवस | २० अगस्त |
| ३. सामायिक दिवस | १६ अगस्त | ८. संवत्सरी महापर्व | २१ अगस्त |
| ४. वाणी संयम दिवस | १७ अगस्त | ९ क्षमापना दिवस | २२ अगस्त |
| ५. अणुव्रत चेतना दिवस | १८ अगस्त | | |

## i;"k.k vkjkèkuk

१. प्रतिदिन तीन सामायिक
२. प्रतिदिन दो घंटा मौन
३. प्रतिदिन एक घंटा स्वाध्याय
४. प्रतिदिन नौ द्रव्यों से अधिक खाने का त्याग
५. सचित्त और जमीकन्द खाने का त्याग
६. ब्रह्मचर्य का पालन
७. जप व ध्यान आधा घंटा
८. रात्रि भोजन का परिहार
९. सिनेमा, फिल्म आदि का परिहार

## prekl e lek;kT; thou foKku l lEc) dk;Øe

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में जसोल चतुर्मास के दौरान जीवन विज्ञान अकादमी-जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा समायोज्य कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

- २५ जुलाई — जीवन विज्ञान कार्यकर्ता व प्रशिक्षक सम्मेलन
- २६ जुलाई — तेरापंथ विद्यालय एवं जीवन विज्ञान से जुड़े विद्यालयों का सम्मेलन
- ६ से १० अगस्त — जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
- १९ सितम्बर — महाविद्यालय स्तरीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर
- १७ से २१ अक्टूबर — राष्ट्रीय जीवन विज्ञान विद्यार्थी शिविर
- २६ नवम्बर — जीवन विज्ञान दिवस समारोह

इन सभी कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी के लिए मो. ०९९५००३९३१३, ०१५८१-२२२९७४ पर संपर्क किया जा सकता है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

## lkèoh fl)iKkth ¼ykMuw½ dkyèke dk lkikIr

लाडनूं सेवाकेन्द्र में स्थित साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी (लाडनूं) १० जुलाई २०१२ को कालधर्म को प्राप्त हो गई। उनके विषय में पूज्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

## vkn'k lkfgR; l?k }kjk HkV

३१००/- चि. थरेन्द्र लूणिया (सुपौत्र-स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी लूणिया) के बीस वर्ष की उम्र में सी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में श्री मूलचन्द, विमलकुमार, कनकदेवी, रजनीश लूणिया, श्रीडूंगरगढ़-इन्दोर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री ओमप्रकाश-पदमा बेगवानी (राजगढ़-विशाखापत्तनम) के दाम्पत्य जीवन की २५वीं वर्षगांठ (रजत जयंती) के उपलक्ष्य में उनके पिताश्री मालचन्दजी, मातुश्री कंचनदेवी, सुपुत्र नवीन एवं सुपुत्री निकिता बेगवानी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मोहनलालजी सिंघी (सुपुत्र-स्व. कस्तूरचन्दजी सिंघी, बीदासर) की पुण्यस्मृति में विमल, पन्नालाल, मनोज, संजय एवं समस्त सिंघी परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती चुकीदेवी (धर्मपत्नी-स्व. मीठालालजी तलेसरा, बालोतरा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र गणपतलाल, सुरेशकुमार, सुपौत्र अमितकुमार, अक्षयकुमार एवं प्रपौत्र तन्मय तलेसरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती भंवरबाई रांका (धर्मपत्नी-स्व. हीरालालजी रांका, आसीन्द) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र तेजमल, चांदमल रांका द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. डॉ. मानकचन्दजी प्रेमराजजी नाहर, परतूर (महाराष्ट्र) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू दिलीप-अंजली, राजेश-मनीषा, सुपौत्र लक्ष्य, नैतिक, सुपौत्री-आस्था, श्वेता नाहर द्वारा प्रदत्त।

## lèkkjdj i<

• गतांक - १४ में चातुर्मासिक प्रवास की सूची में महाराष्ट्र प्रान्त के अन्तर्गत मुनि आलोककुमारजी घाटकोपर (श्रा.भा.), दक्षिण मुम्बई (आ.का.) ।

• २६ जुलाई जसोल चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर पूज्यवर ने जसोल के साधु-साध्वियों का उल्लेख करते हुए साध्वी नन्दिताश्री और साध्वी तरुणप्रभाजी का भी नामोल्लेख किया।

**i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&**

**d'koilkn proh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk;Z egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]**
**ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šf] ‹…‡„†,†^†f**
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

**idk'ku fnukd % f४&‰&„,f„**

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : d'koilkn pronhA